नोवीना

स्वर्गारोहण से
पैन्तेकुस्त तक

बिशप ऐन्थोनी पोग्गो
महासचिव, ऐंग्लिकन सहभागिता

तेरा राज्य आए

नोवीना

तेरा राज्य आए

नोवीना

स्वर्गारोहण से पैन्तेकुस्त तक

बिशप ऐन्थोनी पोग्गो
महासचिव, ऐंग्लिकन सहभागिता

परिचय

'आ पवित्र आत्मा।' यह सहज लेकिन गंभीर प्रार्थना, *तेरा राज्य आए* का मर्म है। 172 देशों में फैल चुकी प्रार्थना की इस वैश्विक लहर की जड़, आरम्भिक कलीसिया के उस अभ्यास और अनुभव में है, जिसमें वे यीशु की आज्ञा का पालन करते हुए पवित्र आत्मा के वरदान के उण्डेले जाने का इंतज़ार कर रहे थे।

प्रेरितों के काम 1:14 हमें बताता है कि उनका जीवन-उद्देश्य (मिशन), निरंतर और प्रभावशाली प्रार्थना पर आधारित था:

वे सब एकचित्त होकर कुछ स्त्रियों और यीशु की माता मरियम और यीशु के भाइयों सहित लगातार प्रार्थना में लगे हुए थे।

प्रभु यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान में एक नए समाज का जन्म हुआ था। उन्हें एक काम सौंपा गया था: कि वे पृथ्वी के छोर तक मसीह के साक्षी हों। पैन्तेकुस्त उन्हें यह दिखाने वाला था कि परमेश्वर के उद्धार की योजना में भाषा या संस्कृति की कोई बाधा नहीं होनी थी; सभी लोगों के लिए क्षमा और अनन्त जीवन का सुसमाचार उनकी अपनी भाषा में, ऐसी बोली में सुनना ज़रूरी था जिसे वे समझ सकते हों। ऐसा नहीं था कि उन्हें कलीसिया की भाषा सीखने की ज़रूरत थी, लेकिन यह पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से होना था। कलीसिया को इसलिए भेजा गया था कि वह ऐसे शब्दों में मसीह को बाँटना सीखे जिसे जगत के लोग समझ सकते हों।

तेरा राज्य आए का इस साल के नोवीना के वैश्विक पटल पर एक ख़ास स्थान है। हम ऐंग्लिकन सहभागिता के महासचिव, बिशप ऐन्थोनी पोग्गो के बहुत आभारी हैं कि उन्होंने इस साल के लेखक होने की चुनौती को स्वीकार किया। उनकी भरपूर अफ्रीकी विरासत, जिसमें उनकी हरेक महाद्वीप में आसानी से घुलमिल जाने की क्षमता भी जुड़ी हुई है, हम सभी को 'आ पवित्र आत्मा' प्रार्थना करने में मदद करेगी, फिर चाहे परमेश्वर ने हमें जगत में कहीं भी क्यों न रखा हो।

इस साल हम अपने प्रतिदिन के अध्ययन के लिए प्रकाशितवाक्य के आरम्भिक अध्यायों पर ध्यान लगाएँगे। आज हम जैसे अशान्त जगत में रहते हैं, बाइबल की अंतिम पुस्तक से उससे मिलती-जुलती बहुत सी बातें हैं। हिंसा, अत्याचार, स्त्रियों और बच्चों का शोषण आदि, रोमी साम्राज्य के आम जीवन में एक वैसे ही अंतरंग रूप में थे जैसे वे आज पूरे जगत में हैं।

हम अपनी प्रार्थनाओं में परमेश्वर के जगत को उसकी तरफ उठाते हैं, और फिर हममें से हरेक हमारी जान-पहचान के ऐसे पाँच लोगों के बारे में सोचते हुए जो अभी प्रभु यीशु के पीछे नहीं चल रहे हैं, प्रार्थना की उस पुकार पर एक ज़्यादा व्यक्तिगत रूप में अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। हम यह प्रार्थना करते हैं कि वे भी उस शान्ति, प्रेम और अनन्त जीवन में आनन्द मना सकें जो एक अनोखे रूप में सिर्फ उसमें ही मिलता है।

मसीही लोग अक्सर महान् आज्ञा को पूरा करने से इसलिए चूक जाते हैं क्योंकि हम उन बातों पर अपना ज़्यादा ध्यान लगाते जिनमें हमारे एक-दूसरे से मतभेद होते हैं। हमारी आशा है कि इस साल का *तेरा राज्य आए,* हम सभी को यीशु के सुसमाचार के सत्य और इस सुसमाचार को सारे जगत में ले जाने के काम में एक-दूसरे के साथ जोड़ देगा।

हमारी आशा है कि आप भी हमारे साथ मिलकर यह प्रार्थना करेंगे: 'आ, पवित्र आत्मा।'

कैन्टरबरी के आर्चबिशप, जस्टिन वैल्बी

यॉर्क के आर्चबिशप, स्टीफन कॉट्रैल

1

2

3

4

5

स्वर्गारोहण का दिन
यीशु प्रभु है

प्रकाशितवाक्य 1:4-5

उसकी ओर से जो था, जो है, और जो आने वाला है, और उन सात आत्माओं की ओर से जो उसके सिंहासन के समक्ष हैं, और यीशु मसीह की ओर से जो विश्वासयोग्य साक्षी, मृतकों में से जी उठने वाला पहलौठा, और पृथ्वी के राजाओं का शासक है।

'क्या वहाँ कोई है?'
कोई फोन नहीं उठा रहा है।
कोई दरवाज़ें खटखटाने पर नहीं खोल रहा है।
कोई टैक्स्ट मैसेज का जवाब नहीं दे रहा है।
नगाड़ा बजता है लेकिन कोई नहीं आता है।

'क्या वहाँ कोई है?' एक ऐसे जगत में जिसमें इतना ज़्यादा क्रोध व हिंसा, अत्याचार व अन्याय, अलगाव व अकेलापन है, जहाँ इतने स्थानों में स्त्रियों के साथ बुरा व्यवहार होता है, और बच्चे अनाथ हो जाते हैं व उनका शोषण होता है, तो जब हम प्रार्थना करने के लिए आते हैं तो हमारे लिए यह सवाल पूछना स्वाभाविक ही है, 'क्या वहाँ कोई है?'

यह एक वास्तविकता है कि उस समय से लेकर अब तक, जब पतमुस नामक यूनानी द्वीप पर निष्कासित किए गए यूहन्ना ने वे दर्शन देखे थे जो हम आज प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में देखते हैं, दुष्टता का विनाशक प्रभाव ज़्यादा नहीं बदला है। रोमी सेनाओं की जगह उग्रवादी आ गए हैं, लेकिन गाँवों पर होने वाले हमले, अपहरण, मृत्यु और विनाश, सब वैसा ही है। शस्त्र बदल गए हैं, लेकिन दुष्टता का आतंक नहीं बदला है।

इसलिए, हमारे पास पहुँचे ये शब्द हमारे लिए भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने ये एशिया प्रान्त (आधुनिक तुर्की) के मसीहियों के लिए प्रासंगिक थे। ये शब्द सिर्फ एक निष्कासित प्रेरित के पास से नहीं आए हैं, बल्कि स्वर्ग के सिंहासन से आए हैं! और इसमें सुसमाचार है।

वहाँ कोई है!

आज के पदों में वही बड़ा आश्वासन है। यूहन्ना ने जिन मसीहियों को लिखा था, वे यह जानते थे कि यीशु में विश्वास करने की वजह से होने वाले सताव, क़ैद, और मार डाले जाने की सम्भावना क्या होती है। उनके सामने यह परीक्षा थी कि वे हार मानकर (अपना

ऐंग्लिकन सलाकार परिषद की आराधना सभा, घाना

विश्वास) छोड़ दें क्योंकि प्रत्यक्ष रूप में एक मसीही होना प्रचलित संस्कृति के साथ बिलकुल भी सुसंगत नहीं था।

वह जो वास्तव में वहाँ है: सर्वशक्तिमान परमेश्वर, पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा, अपने लोगों से कृपा व शान्ति, उत्साह व चुनौती, और आश्वासन व ताड़ना के शब्द बोलता है। यह वही यीशु है जो कभी नहीं बदलता; वह कल, आज और युगानुयुग एक जैसा है (इब्रानियों 13:8)।

एक अफ्रीकी मुहावरा है जो कहता है, 'उकाब सिर्फ मुर्ग़ी के ही बच्चे ले जाता है, शेर के बच्चे को कोई चिंता नहीं होती।' शेर के बच्चे को डरने की कोई ज़रूरत नहीं होती क्योंकि उकाब उसके पिता से डरता है। जब हमें यह याद रहता है कि हम मसीह में कौन हैं, तब डर की जगह भरोसा ले लेता है।

यूहन्ना ने जब 'स्वर्ग को खुलते हुए देखा,' तो उसमें आश्वास्त करने वाला यह चित्र है कि हमें सम्बोधित करने वाला वह परमेश्वर है जिसने सब कुछ और हमें भी बनाया है, वह प्रभु जिसने अपने जीवन में हमें सहभागी किया है, जो हमारे बदले में मर गया और मृत्यु पर जयवंत होकर जी उठा था। हमें सम्बोधित करने वाला वह पवित्र आत्मा है जो यीशु ने उन सभी को देने की प्रतिज्ञा की थी जो उसमें विश्वास करते हैं।

अगले कुछ दिनों के दौरान, ऐसे पाँच लोगों के बारे में सोचें जिनका आपके हृदय पर बोझ है, और जिनके लिए हम साथ-साथ आगे बढ़ते हुए प्रार्थना कर सकते हैं। जब हम आज अपने पाँच लोगों के लिए प्रार्थना करेंगे, तो हम उन्हें उस अद्‌भुत परमेश्वर के पास लाएँगे जो उन्हें जानता है और उनसे प्रेम करता है। उसके प्रेम और उसकी इच्छा में, अनन्त शान्ति है।

वह परमेश्वर जो प्रेम करता है

प्रकाशितवाक्य 1:5-6

वह जो हमसे प्रेम करता है और जिसने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया, और हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक बनाया, उसकी महिमा और सामर्थ्य युगानुयुग हो, आमीन।

प्रकाशितवाक्य की चित्र-पुस्तक में हमारे लिए इस बारे में कुछ चुनौतियाँ रखी हैं कि हम एक बहुत ही दोषपूर्ण संसार में यीशु के लिए कैसे जीवन बिताते हैं। इसमें कुछ चित्र काफी डरावने भी हो सकते हैं।

लेकिन हमें दिए गए इस वचन का अद्‌भुत सत्य यह है, कि यह प्रभु यीशु को हमारे सम्मुख रखते हुए शुरू होता है, और यह सत्य हमारे हृदयों और मनों में शान्ति भर देता है। 'वह जो हमसे प्रेम करता है और जिसने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया।' यह कितना अनोखा संयोजन है: प्रेम और मुक्ति। परमेश्वर यह चाहता है कि हम यह जानें कि यीशु मसीह में हम प्रेम के पात्र और हमें मुक्ति मिल चुकी है। हमसे प्रेम किया गया है, जैसा कि एक प्रचारक ने व्याख्या करते हुए कहा, 'मानो प्रेम करने के लिए हमारे अलावा दूसरा कोई था ही नहीं!'

आज के इस जगत में स्वयं को छोटा और मामूली समझ लेना आसान है। पर्यावरण में हो रहे बदलाव, भूखमरी, रहने की जगह की कमी, युद्ध, परिवारों का टूटना-बिखरना – वह सब कुछ जो अक्सर सबसे ग़रीब लोगों को ही प्रभावित करता है – बहुत बड़ा और डरावना लगता है।

परमेश्वर हममें से हरेक से व्यक्तिगत रूप में कैसे प्रेम कर सकता है? वह करता है।

बाइबल हमें बार-बार इस महान् सत्य के बारे में बताती है, लेकिन अगर आपको कहानियाँ याद रखना आसान लगता है, तो सुसमाचारों में उस स्त्री को याद करें जिसने चंगाई पाने के लिए सिर्फ यीशु के वस्त्र के छोर को ही छुआ था, और वह वास्तव में चंगी हो गई थी। लेकिन यीशु, जो उस समय एक छोटी लड़की की मदद करने के लिए जा रहा था, रुक गया, और उसने यह सुनिश्चित किया कि वह स्त्री उसके स्पर्श से न सिर्फ चंगाई ही पाए बल्कि अनन्त जीवन के लिए उद्धार देने वाला विश्वास भी पाए (मरकुस 5:24-34)। अपने बहुत से क्रिया-कलापों के बीच भी, यीशु के पास इस स्त्री के लिए रुकने का समय था। हममें से ऐसे कितने लोग हैं जो अपने अति-व्यस्त कार्यक्रमों के बावजूद, दूसरों की मदद करने के लिए परमेश्वर की बुलाहट का जवाब देने के लिए तैयार रहते हैं?

कुछ संस्कृतियों में बुज़ुर्ग लोगों का बहुत आदर किया जाता है, लेकिन उनमें युवाओं की ज़रूरतों पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया जाता। फिर कुछ दूसरी ऐसी संस्कृतियाँ हैं जिनमें युवाओं के लिए तो अवसर तैयार में निवेश किया जाता है, लेकिन उन बुज़ुर्ग लोगों की अवमानना की जाती है जिन्होंने अपने पूरे जीवन दूसरों के लिए अर्पित कर दिए और जिन्हें अब मदद और देखभाल की ज़रूरत है। हमारी उम्र, पारिवारिक पृष्ठभूमि, राष्ट्रीयता, जाति/नस्ल, लिंग, शिक्षा, नौकरी, धन-सम्पत्ति या मान-मर्यादा को अनदेखा करते हुए, परमेश्वर हमसे प्रेम करता है। 'परमेश्वर प्रेम है,' यही वह सबसे सहज और श्रेष्ठ बुनियाद है जिस पर खड़े होकर हम परमेश्वर, जगत, और स्वयं अपने आपको देख सकते हैं।

यक़ीनन, शब्द हल्के और कभी-कभी निरर्थक हो जाते हैं। सेनेगल का एक मुहावरा इस बात को इस तरह व्यक्त करता है: 'वह कह सकता है कि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ; इंतज़ार करो और यह देखो कि वह तुम्हारे लिए क्या करता है।' यही वजह है कि परमेश्वर के प्रेम के आश्वासन के बाद बोले जाने वाले शब्द इतने ज़बरदस्त सामर्थ्य से भरे होते हैं। 'उसने अपना लहू बहाकर हमारे पापों से हमें छुड़ाया है।' मनुष्य की त्वचा का रंग या उसकी जातीय नस्ल चाहे कोई भी हो, लेकिन सबके लहू का रंग लाल ही होता है। क्रूस पर बहाया गया लहू विश्व के सब लोगों के लिए है, और वह रंग और नस्ल के भेद को अनदेखा करते हुए मसीह के छुटकारे के काम को परमेश्वर के सभी लोगों के लिए प्रदर्शित करता है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अंत में, परमेश्वर का प्रेम हमारे लिए - जो उसके लिए अति-मूल्यवान हैं, उसके स्वरूप व समानता में बनाए गए हैं, और मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान द्वारा छुड़ाए गए हैं - एक बहुत ही आत्मीय और व्यक्तिगत रूप में अभिव्यक्त किया गया है। हम यह पढ़ते हैं: 'वह हमारी आँख से हरेक आँसू पोंछ देगा।' कोई हमारे आँसू पोंछ सके, इसके लिए हमें उसे अपने पास आने देना होगा।

आज जब आप अपने पाँच लोगों के लिए प्रार्थना करें, तो उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में लाएँ, और यह कहें कि वे चाहे कैसी भी चुनौतियों का सामना कर रहे हों, फिर भी वे प्रभु को उनके इतना पास आने की अनुमति दें कि फिर वह उस काम को कर सके जो सिर्फ वही कर सकता है।

बारीसाल, बांग्लादेश का धर्मप्रदेश (डाओसीज़)

वह परमेश्वर जो बोलता है

प्रकाशितवाक्य 1:10-11

मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया, और मैंने अपने पीछे तुरही की आवाज़ जैसा एक बड़ा शब्द यह कहते सुना, 'तू जो कुछ देखता है उसे पुस्तक में लिख ले और सातों कलीसियाओं... को भेज दे।'

यूगान्डा की *ऐन्गॉम्बे* कही जाने वाली सींग की तुरही से लेकर भारत की शादियों में बजाई जाने वाली काँसे की तुरही, या फिर माओरी कबीले द्वारा स्वागत करने के लिए बजाई जाने तुरही *पुकाइया* तक, जहाँ कहीं भी तुरही बजाई जाती है, वह हमसे उस पर ध्यान देने की माँग करती है। दूसरी संस्कृतियों में, जैसे दक्षिणी सूडान की दिनका जनजाति में, ढोल भी यही भूमिका निभाते हैं। उन्हें अनसुना नहीं किया जा सकता। वे एक चेतावनी हो सकती है, लम्बे समय से इंतज़ार किया जा रहा कोई ख़ुशी का प्रसंग हो सकता है, या फिर युद्ध के लिए तैयार हो जाने का आह्वान भी हो सकता है; लेकिन उनकी आवाज़ को कभी अनसुना नहीं किया जा सकता।

यूहन्ना, जो निष्कासित होकर पतमुस द्वीप में क़ैद था, जो अपने कलीसियाई परिवार और मित्रों से दूर कर दिया गया था, और जो बेशक यह सोच रहा था कि अब उसके लिए किस तरह की सेवकाई करना सम्भव है, अचानक यह पाता है कि उसकी रविवारीय आराधना की शान्ति को एक तेजस्वी आवाज़ ने चकनाचूर कर दिया है; यह महिमान्वित प्रभु यीशु की आवाज़ थी। वही यीशु जो उसका मुक्तिदाता और उसका सबसे अच्छा मित्र था, अब प्रेरित को आश्वस्त करते हुए कहता है कि उसका काम ख़त्म नहीं हो गया है, बल्कि उसके लिए एक नई सेवकाई तैयार है।

फिर जो कुछ उसने सुना, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक उसका नतीजा है, जो अपने शुरू के पदों में कहती है, 'परमेश्वर उन्हें आशिष देगा जो नबूवत के इन वचनों को सुनते हैं और इसमें लिखी हुई बातों का पालन करते हैं।' जगत के कुछ भागों में, यह एक बहुत ही संस्कृति-विरोधी बात बन जाती है। जैसे कि अफ्रीकी स्टडी बाइबल में यह टिप्पणी की गई है: 'अनेक स्थानों में, मसीहियों को तुच्छ जाना जाता है और बाइबल की निन्दा की जाती है।'

बाइबल की तुरही, जैसा कि सुधारवादी समयकाल के शाहिद आर्चबिशप क्रैनमर ने कहा था 'परमेश्वर का लिखित वचन कभी बोलना बन्द नहीं करता।' फिर भी, हालांकि वह तो बोलना बन्द नहीं करता, लेकिन हम सुनना बन्द कर सकते हैं। ऐसा बहुत आसानी से हो जाता है कि प्रतिदिन हमारे लिए बाइबल पढ़ने का समय निकालना और पवित्र आत्मा से उन बातों को हमारे जीवनों में लागू करना, दूसरी बातों के दबाव की वजह से हमसे दूर हो जाता है। ये

दूसरी बातें अक्सर अपने आप में अच्छी बातें होती हैं – खेल-जगत, बच्चों की गतिविधियाँ, मित्रों के साथ बिताया गया समय, और परिवार का ख़र्च चलाने के लिए काम-धन्धे में इस्तेमाल होने वाला समय – लेकिन इन बातों को परमेश्वर के वचन की जगह ले लेने की अनुमति नहीं दी जा सकती।

कुछ संस्कृतियों में, हमारे आसपास का संसार एक कैंची लेकर पवित्र शास्त्र के उन भागों को काटकर अलग कर देना चाहता है जो उसे पसन्द नहीं आते; ऐसे भाग जो हमारे स्वार्थी स्वभाव और पाप को चुनौती देते हैं। हम पवित्र शास्त्र को अपने समाज/संस्कृति से बढ़कर जानें। उदाहरण के तौर पर, जिस संस्कृति में बदला लेने और 'आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत' जैसे विचार को बढ़ावा दिया जाता हो, वहाँ हमें यह सिखाने की ज़रूरत है कि परमेश्वर का वचन कहता है कि अपना बदला स्वयं नहीं लेना है बल्कि इसे परमेश्वर के ऊपर छोड़ देना है, क्योंकि ऐसा लिखा है, 'बदला लेना मेरा काम है, बदला मैं दूँगा' (रोमियों 12:19)। बदला लेने की सच्चाई यह है कि फिर इससे बदला लेने का एक चक्र शुरू हो जाएगा। महात्मा गाँधी ने कहा था, 'आँख के बदले आँख लेने से सारा जगत अन्धा हो जाएगा।'

आज जब आप अपने पाँच लोगों के लिए प्रार्थना करें, तो उनके लिए और हमारे लिए यह प्रार्थना करें कि परमेश्वर का जो वचन हमारे लिए है, उसे हम एक स्पष्ट और निश्चित रूप में सुन सकें। जैसा कि आर्चबिशप क्रैनमर ने कहा था, 'जिसमें जो कुछ भी मिले, उसे एक ठोस आधार और अचूक सत्य के रूप में ग्रहण करना चाहिए।'

नवजागृति सम्मेलन, ट्रिनिडाड व टोबागो का धर्मप्रदेश

वह परमेश्वर जो रचना करता है

प्रकाशितवाक्य 1:8

प्रभु परमेश्वर, जो है, जो था, जो आनेवाला है, और जो सर्वशक्तिमान है, यह कहता है, 'मैं ही अल्फा और ओमेगा हूँ।'

यह एक छोटा सा पद, जो बाइबल की अंतिम पुस्तक के आरम्भ में ही है, हमारे परमेश्वर के बारे में कितना कुछ बताता है। यह वह परमेश्वर है जिसने सब वस्तुओं की रचना की है, जो अपने आपको प्रकट करता है, जो प्रभु यीशु मसीह में हमें बचाता है, और ऐसे हरेक व्यक्ति में अपने पवित्र आत्मा द्वारा आकर बस जाता है, जो यीशु में अपना विश्वास व्यक्त करता है।

नई वाचा यूनानी भाषा में लिखी गई थी। यूनानी वर्णमाला के पहले व अंतिम अक्षर, अल्फा और ओमेगा, जिन्हें यहाँ परमेश्वर की व्याख्या करने के लिए इस्तेमाल किया गया है, रोमी सताव सहने वाले मसीहियों को यह आश्वासन देते हैं कि चाहे कुछ भी होता रहे, सब कुछ परमेश्वर के वश में है और वे समय और अनन्त में पूरी तरह सुरक्षित हैं।

अगर हम बाइबल की पहली पुस्तक उत्पत्ति के बारे में विचार करें, जो सब बातों के आरम्भ की पुस्तक है, और उनमें परमेश्वर की समानता में रचे गए मनुष्य भी शामिल हैं। उसने मनुष्यों को उस बाग़ की देखभाल करने का काम सौंपा जो उसने बनाया था। यह याद करना कि परमेश्वर सर्वशक्तिशाली है, हमें नींद से जगा देने वाली पुकार होनी चाहिए। पवित्र परमेश्वर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के हमारी नींव, हमें सम्भालने वाली शक्ति, और हमारा अनन्त निवास बन जाने की बजाय, ऐसा बहुत आसानी से हो जाता है कि हमारे जीवन के जंगल में हमारा विश्वास सिर्फ एक अकेले पेड़ की तरह खड़ा रह जाए।

परमेश्वर को कुछ रचने से, और कुछ बिगड़ जाने पर उसे दोबारा रचने से ख़ुशी होती है। जब ऐसा हुआ, जब हमारा पाप ने जगत को, एक-दूसरे के साथ हमारे सम्बंध को, और परमेश्वर के साथ हमारे सम्बंध को भी दूषित और कलंकित कर दिया, तो परमेश्वर ने पहले से ही एक उद्धार की योजना तैयार कर ली थी। यह एक ऐसी योजना है जो परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में विश्वास करने वाले लोगों को, क्रूस, पुनरुत्थान और स्वर्ग की महिमा में पहुँचाएगी।

एक अफ्रीकी नीतिवचन कहता है, 'अगर आप अपनी वृद्धावस्था में एक पेड़ की छाया तले बैठना चाहते हों, तो आज एक पौधा लगा दें।' सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जो यह चाहता है कि हम नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में उसके साथ अनन्त जीवन बिताएँ, उसने यीशु के क्रूस के रूप में अपना पेड़ लगा दिया है। उसके पवित्र आत्मा द्वारा हम उसकी नई सृष्टि हैं, और उसकी यह अभिलाषा है कि हम सब उसमें सहभागी हों।

आज पूरे संसार में बहुत से लोगों की जो यह इच्छा कि वे जगत की देखभाल करें, यह दर्शाता है कि परमेश्वर की समानता में रचे जाने का क्या अर्थ होता है। अगर हम बाग़ के प्रभु को न भी जानते हों, फिर भी हममें बाग़बान होने की एक भूख होती है।

आज जब आप अपने पाँच लोगों को प्रभु के सम्मुख लाएँ, तो उनके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें और यह प्रार्थना करें कि परमेश्वर की सृष्टि की देखभाल करने की उनकी और हमारी अभिलाषा, हमें उसे जानने और उससे प्रेम करने की तरफ बढ़ाए जिसने सब कुछ रचा है।

ऐंग्लिकन सहभागिता का कार्यालय

वह परमेश्वर जो देता है

प्रकाशितवाक्य 3:7-8

जो पवित्र व सच्चा है और जिसके पास दाऊद की कुँजी है - वह खोलता है तो कोई बन्द नहीं कर सकता, और बन्द करता है तो कोई खोल नहीं सकता, यह कहता है: 'मैं तेरे कामों का जानता हूँ। देख, मैंने तेरे लिए एक द्वार खोल रखा है, जिसे कोई बन्द नहीं कर सकता।'

'मुफ़्त भेंट' का विद्यापन के क्षेत्र में एक बड़ा आकर्षण होता है। चाहे वह ऐसी वस्तु हो जिसकी आपको न तो ज़रूरत है और न ही अभिलाषा, फिर भी उसका मुफ़्त होना अक्सर एक चुम्बकीय आकर्षण से भरा होता है। पूरे जगत के इतिहास में, ऐसे अनेक लोग हुए हैं जिन्होंने कुछ ख़ास तरह की भेंट अर्पित करने, कुछ ख़ास विधियाँ करने, या कुछ ख़ास 'पवित्र' स्थानों का दर्शन करने द्वारा आराधकों से परमेश्वर की कृपा प्राप्त करने के वादे किए हैं।

लेकिन मसीही सुसमाचार पूरी तरह से, और एक अद्‌भुत रूप में इन बातों से अलग है। बाइबल के सबसे ज़्यादा पसन्द किए जाने वाले पदों में से एक, यूहन्ना के सुसमाचार का पद 3:16 कहता है, 'परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उसमें विश्वास करे, वह नाश न हो बल्कि अनन्त जीवन पाए।' परमेश्वर देता है, देता है, और बार-बार देता है। अगर हम मसीही हैं, तो हमने जगत में सबसे बड़ी मुफ़्त भेंट प्राप्त कर ली है। हमें यीशु मसीह में अनन्त जीवन मिल गया है, जिसे अर्जित करने के लिए हमने न तो कुछ किया है और न ही हम जिसके योग्य हैं। हमने विश्राम पा लिया है। अब हम इस सत्य में तसल्ली पा सकते हैं कि यह हमारे किए हुए किसी काम पर निर्भर नहीं है, बल्कि इस पर परमेश्वर ने क्या किया है।

आज का पद प्रकाशितवाक्य में तुर्की स्थित फिलादेलफिया नगर को दिए गए संदेश में से लिया गया है। वह नगर व्यापार का बड़ा केन्द्र था जहाँ प्रतिदिन ख़रीदना व बेचना उसके दैनिक जीवन का एक बड़ा हिस्सा था। यीशु ने उन्हें एक दूसरी तरह की मुफ़्त भेंट के बारे में लिखा। उसने उन्हें आश्वस्त किया कि वे उसके चरित्र में विश्राम पा सकते हैं। वह उन्हें ऐसा कुछ नहीं देने वाला था जिससे उन्हें नुक़सान होता, बल्कि वह उन्हें एक ऐसी भेंट दे रहा था जो बढ़ने और कलीसिया को बढ़ाने वाली थी...

वह उन्हें एक खुला हुआ दरवाज़ा दे रहा था!

क्या यह कोई अजीब सी भेंट लगती है? शायद किसी प्रार्थना का जवाब, आत्मा के और दान-वरदान, उसकी उपस्थिति का और गहरा एहसास, या फिर बाक़ी और अनेक बातों का पूरा

हो जाना उनके लिए ज़्यादा ख़ुशी की बात होती। लेकिन उन्हें स्वयं मसीह को अपने मित्रों, अपनी संस्कृति, और अपने नगर में बाँटने का आमंत्रण मिला था।

तेरा राज्य आए बस हमारे परिचित लोगों के, शायद सिर्फ पाँच लोगों के ही जीवनों में यह प्रार्थना करना है: 'आ पवित्र आत्मा,' कि फिर वे प्रभु यीशु में परमेश्वर के उद्धारक प्रेम को जान सकें। मसीह हमसे कहता है कि उसने द्वार खोल दिया है, और अब हमें उसमें प्रवेश करना है।

हम जब भी हमारे आसपास के लोगों के साथ परमेश्वर के प्रेम को अपने हृदय में लेकर कोई बात या कोई काम करेंगे, तो हम उस दरवाज़े में प्रवेश कर रहे होंगे जो यीशु ने हमारे लिए खोल रखा है।

हमें कभी-कभी ऐसा लग सकता है कि हमारी कोशिशों से कोई फर्क़ नहीं पड़ेगा। एक हास्यस्पद अफ्रीकी मुहावरा है जो इसमें हमें राह दिखाता है। वह कहता है, 'अगर तुम सोचते हो कि कुछ बदलाव लाने के लिए बहुत छोटे हो, तो एक रात मच्छरों के बीच में गुज़ार कर देखो।' इस सप्ताह यह मुहावरा मेरे लिए एक यथार्थ रूप में है क्योंकि मैं दक्षिण सूडान के जूबा में बैठकर यह लिख रहा हूँ जहाँ बहुत मच्छर हैं।

अपने पाँच मित्रों के लिए प्रार्थना करना जारी रखते हुए, परमेश्वर से प्रार्थना करें कि दूसरे लोगों के साथ भी उसका वचन बाँटने के लिए वह बहुत से दरवाज़े खोल दे जिससे कि वे प्रभु यीशु मसीह के बारे में व्यक्तिगत जानकारी हासिल कर सकें।

तेरा राज्य आए का कोलम्बो, श्रीलंका में त्रिभाषी कार्यक्रम

वह परमेश्वर जो संग-संग चलता है

प्रकाशितवाक्य 1:12-16

फिर मैं उससे जो मुझसे बोल रहा था देखने के लिए मुड़ा, और फिर कर मैंने सोने के सात दीपदान देखे। और उन दीपदानों के बीच मनुष्य के पुत्र जैसा एक पुरुष देखा जो पैरों तक चोग़ा पहने और छाती पर एक सुनहरा पट्टा बाँधे हुए था। उसका सिर और उसके बाल ऊन जैसे चमकदार थे, और उसकी आँखें आग की ज्वाला जैसी थीं। उसके पैर ऐसे चमकदार पीतल के समान थे जो भट्ठी में तपाकर चमकाया गया हो। उसकी आवाज़ बड़ी जलराशियों की गर्जन जैसी थी। वह दाहिने हाथ में सात तारे लिए था, और उसके मुख से तेज़ दोधारी तलवार निकलती थी। उसका मुख दोपहर के सूर्य की तरह चमक रहा था।

'क्या यह तुम ही हो?' हमने जिसे बहुत सालों से न देखा हो, उससे मुलाक़ात हो जाने पर हम शायद यही कहेंगे। वे कुछ अलग नज़र आते हैं। वे कुछ अलग तरह कपड़े पहने हो सकते हों, उनका शायद वज़न पहले से ज़्यादा हो गया हो, या उन्होंने एक नए तरीक़े से अपने बाल बनाए हों, लेकिन फिर भी उनमें कुछ ऐसी जानी-पहचानी बात होती है जिससे हमें यक़ीन हो जाता है कि यह तो वही व्यक्ति है।

लेकिन यूहन्ना को ऐसा कोई संदेह नहीं था कि उससे बात करने वाला व्यक्ति यीशु ही था, वही जो उसकी निष्कासित दशा, उसकी यादों, उसके अकेलेपन, उसके विश्वास और उसकी आशा के दायरों को तोड़कर उनके बीच में आ खड़ा हुआ था। जिस अद्भुत और महिमामय व्यक्ति को उसने देखा, उसमें बहुत सी बातें बहुत बदली हुई थीं। जैसे-जैसे उसका ध्यान उस पर केन्द्रित होता गया, उसके मन में पुरानी वाचा के अनेक चित्रण उभर आए।

लम्बा चोग़ा और छाती का सुनहरा पट्टा महायाजक के वस्त्रों की याद दिलाता था, और उस पहले पवित्र शुक्रवार (गुड फ्राइडे) के दिन यीशु की तरफ संकेत कर रहा था, जो वास्तव में परमेश्वर का वह मेमना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है।

सफ़ेद बाल और धधकती आग दानिय्येल के अध्याय 7 में सर्वशक्तिमान परमेश्वर के चित्रण को प्रदर्शित करते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि जो बोल रहा था वह सब बातों के प्रभु के चरित्र और अधिकार में बोल रहा था। बेशक, दानिय्येल 7 की भाषा आज के पठन में शुरू से ही इस वाक्यांश 'मनुष्य के पुत्र जैसा' में मौजूद रही है। यूहन्ना पुरानी वाचा के उस जयवंत प्रभु को देखता है, और जो सुसमाचारों में उसके परम् मित्र के रूप में भी था।

ज़रा इस बात की कल्पना करें: आप परमेश्वर की आवाज़ सुनकर जब पीछे मुड़कर देखते हैं, तो वहाँ आपको अपना परम् मित्र खड़ा हुआ आपकी तरफ देखता हुआ नज़र आता है। वही

मित्र जो आपके साथ गलील की झील के किनारे और यरूशलेम की सड़कों पर चला था। वही मित्र जो यह जानता था गलील के काना में कैसे एक विवाह-भोज में उत्सव मनाया जाता है, और वही जिसने अपने चेलों को गतसमनी के बाग़ में से आतंकित होकर भागते देखा था। इस मित्र के पैर 'एक भट्ठी में चमकाए हुए' थे। यह वाक्यांश वैसे ही यीशु के मनुष्यत्व के बारे में बताता है जैसे बाक़ी चित्रण उसके परमेश्वरत्व के बारे में बताता है।

यूहन्ना का यही मित्र हमारा भी सबसे प्रिय मित्र बनना चाहता है। वह हमारे संग-संग चलने का प्रस्ताव रखता है। परमेश्वर का पुत्र जो एक गौशाला में पैदा हुआ था, जो एक शरणार्थी की तरह भाग निकला था, जिसने एक बढ़ई के रूप में अपनी रोज़ी-रोटी कमाई थी; वही जिसने कोढ़ी से प्रेम किया, चुँगी लेने वाले के साथ खाया-पीया, वेश्या का मित्र कहलाया, और भूखे को खिलाया था।

यही यीशु हमारी तरफ अपनी मित्रता का हाथ बढ़ा रहा है।

यह प्रार्थना करें कि आपके पाँच लोग उस यीशु के बारे में और ज़्यादा जान पाएँ जो वास्तव में यह समझता है कि हम कैसे हालातों का सामना करते हुए उनमें से गुज़रते हैं।

फिजी में ऐंग्लिकन स्कूल के बच्चे

वह परमेश्वर जो सुनता है

प्रकाशितवाक्य 2:9

'मैं तेरे क्लेशों और ग़रीबी को जानता हूँ, लेकिन तू धनवान है।

जब कोई बच्चा आपको उसका पहला चुटकुला सुनाना है, तो वह एक अद्‌भुत अनुभव होता है। शायद उसने यह अपने स्कूल में सीखा था, और अपने मन में उसे इसलिए बार-बार दोहराया था कि घर पहुँचने पर बाक़ी सब लोगों को भी सुनाएगा। वे उसे सुनाते समय हर बार हँसता है। उसके परिवार के लोग भी हँसते हैं, फिर चाहे उन्होंने वह पहले भी क्यों न सुना हो। हालांकि यह एक सच्चाई होती है कि वे पहले से ही उस बात के बारे में जानते हैं, फिर भी वे पूरे ध्यान से उसे सुनते हैं मानो वे उसे पहली बार सुन रहे हों। यह सब सम्बन्धों से जुड़ा मामला है।

जब हम प्रार्थना करते हैं, चाहे अपने लिए, अपने मित्रों के लिए, या फिर देश के बड़े मामले जैसे भुखमरी, युद्ध, पर्यावरण का बदलाव, या ग़रीबी आदि, तो हम प्रभु को कोई ऐसी बात नहीं बता रहे हैं जो वह पहले से ही नहीं जानता है। हम उसे हैरानी में नहीं डाल सकते, लेकिन वह हमारे साथ उसके सम्बंध को महत्वपूर्ण मानता है, और उस बातचीत और ख़ामोशी में हम यह पाते हैं कि हमारे मन, हृदय और इच्छा परमेश्वर के प्रेम और योजना के साथ ज़्यादा सुसंगत होते जाते हैं।

आज के पद में स्मुरना की कलीसिया के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ था। वे एक बहुत सुन्दर नगर में रहते थे, लेकिन उसकी उसकी सुन्दरता के पार्श्व में, मूर्तियों की पूजा और मसीहियों का सताया जाना था। आज की मूर्तियों के स्वरूप अलग-अलग हो सकते हैं - राजनैतिक विचार, कला जगत के सितारों के मत, साथ पढ़ने/काम करने वालों का मनोवैज्ञानिक दबाव आदि - लेकिन मसीहियों को जिस हद तक आज सताया जा रहा है, वैसा इतिहास में पहले कभी नहीं हुआ था।

इसलिए जब हम प्रभु के साथ अपनह मुश्किलों को साझा करते हैं, तो हम पूरे जगत में बीती सदियों के अपने सभी भाइयों और बहनों के मानसिक दबाव, नाकामियाँ और आशंकाओं को साझा कर रहे होते हैं।

तब हम यह पाते हैं कि प्रभु हमें हमारी भरपूरी की याद दिलाता है।

सर्वाधिक शक्ति सेनाओं या नेताओं के पास नहीं होती; वह हमारे स्वर्गीय पिता के पास है जो हमें एक पल के लिए भी नहीं भुलाता। वह वही पिता है जो हमारे बारे में सब कुछ जानता है, और अगर हमने यीशु में विश्वास किया है, तो वही हमें जीवन में से आने वाली सभी मुश्किलों में से पार ले जाएगा और फिर स्वर्ग की अनन्त महिमा में हमारा स्वागत करेगा।

यह दो हज़ार साल पहले स्मुरना के मसीहियों के लिए सच था, और यही आज हमारे लिए भी सच है। आप अपने पाँच लोगों के लिए प्रार्थना करने के साथ-साथ, उन लोगों को भी प्रभु के सम्मुख उठाएँ जो यीशु में अपने विश्वास की वजह से वास्तव में दु:ख उठा रहे हैं, और जिन्हें एक दिन हम महिमा में मिलेंगे। हमें यह याद रहे कि परमेश्वर यह समझता है कि वे किन दु:ख-मुसीबतों में से गुज़रते हैं, और हम इस आश्वासन को दृढ़ता से थामे रहें कि वह यह भी जानता है कि हम सब किन मुश्किलों में से गुज़रते हैं। प्रभु हमारी प्रार्थओं को सुनता है, और वह उन सभी का 'हाँ,' 'नहीं,' या 'इंतज़ार करो' कहते हुए जवाब देता है।

जब हम उसे अपनी आशंकाओं के बारे में बताते हैं और यह कि हम स्वयं अपने पाप से अनजान नहीं हैं, तब वह हमें याद दिलाता है कि यीशु मार्ग, सत्य और जीवन है, और यह कि उसके द्वारा मिली क्षमा मुफ़्त और भरपूर है। जब हम उससे कहते हैं कि हम अपने आपको बहुत कमज़ोर महसूस करते हैं, तब वह हमें अपने पवित्र आत्मा के ज़बरदस्त सामर्थ्य की याद दिलाता है।

जब हम अपने पाँच मित्रों को उसके पास लाते हैं और उससे यह कहते हैं कि हम यह नहीं जानते कि उनके साथ यीशु को कैसे साझा करें, तब वह हमें याद दिलाता है कि उसने हमें ऐसे शब्द देने की प्रतिज्ञा की है, और यह कि मसीह-समान जीवन जीने से बढ़कर और कोई संदेश नहीं होता।

रुताना के बिशप और उनकी पत्नी, रुताना, बुरुण्डी के धर्मप्रदेश में

वह परमेश्वर जो उद्धार करता है

प्रकाशितवाक्य 1:17-18

जब मैंने उसे देखा तो एक मुर्दे की तरह उसके पैरों में गिर पड़ा। तब उसने अपना दाहिना हाथ मुझ पर रखा और कहा, 'मत डर; मैं ही प्रथम, अन्तिम और जीवित हूँ। मैं मर गया था, लेकिन देख, अब मैं युगानुयुग जीवित हूँ! मृत्यु और अधोलोक की कुँजियाँ मेर पास हैं।'

दक्षिण अफ्रीका में दो खान मज़दूरों की एक कहानी है। उनमें से एक मसीही और दूसरा निरीश्वरवादी था। जब वे कोयले की एक बड़ी दरार को खोद रहे थे, तो एकाएक छत में से एक बड़ा टुकड़ा टूट कर गिरा और निरीश्वरवादी के टोप से टकराया। इस डर से कि अब पूरी छत ही टूट कर उन पर गिर जाएगी, वह ज़ोर से चिल्लाया, 'हे परमेश्वर, मेरी मदद कर!' तब उसके मसीही मित्र ने मुस्कुराते हुए उससे कहा, 'देखा, क्या यही बात मैंने तुझसे नहीं कही थी, कि कोयले का बड़ा सा टुकड़ा एक मनुष्य के अविश्वास को तोड़ डालने के लिए काफी होता है।'

हमारे जीवनों में ऐसे पल आते हैं जो हमें रुक कर जीवन के बड़े सवालों के बारे में सोचने वाला बना देते हैं। इन सब बातों का क्या अर्थ होता है? क्या परमेश्वर असली है? क्या वास्तव में एक स्वर्ग है, और अगर है, तो मुझे यह यक़ीन कैसे होगा कि मैं वहाँ जा रहा हूँ? यीशु मसीह की महिमा के दर्शन ने यूहन्ना को थरथरा और दहला दिया, लेकिन उसे उत्तेजना और नई शक्ति से भी भर दिया।

उसकी पहली प्रतिक्रिया तो यही थी कि वह एक मुर्दे की तरह उसके पैरों में गिर पड़ा। यह यशायाह अध्याय 6 में दशाई यशायाह जैसी ही प्रतिक्रिया थी। "तब मैंने कहा, 'मुझ पर हाय, मैं तो नाश हुआ, क्योंकि मैं अशुद्ध होठों वाला मनुष्य हूँ!'"

हमारे पवित्र और महिमामय प्रभु के आगे मानवजाति की प्राकृतिक और सही प्रतिक्रिया यही एहसास है कि वह पवित्र है लेकिन हम पवित्र नहीं हैं।

प्रभु यीशु का जीवन सिद्ध था। हम सुसमाचारों को पढ़ते हैं और हम फ़ौरन ही यह जान लेते हैं कि उन पवित्र शास्त्रों में हमारी जिससे मुलाक़ात होती है दूसरे किसी भी मनुष्य से एक अनोखे व पूर्ण रूप में भिन्न् है। उसने एक वैसा ही आदर्श जीवन बिताया था जैसा बिताया जाना चाहिए।

हमें यह एहसास होता है कि हम वही हैं जिसे बाइबल पापी कहती है - ऐसे लोग जो परमेश्वर के सिद्ध मानकों के अनुसार नहीं हैं। लेकिन इन मानकों की संरचना इसलिए नहीं की गई है कि ये हम मनुष्यों का एक हताशा-भरा अंतिम निदान हों। इसकी बजाय, यही वह

अनिवार्य क़दम है जिसके द्वारा हम यह जान सकते हैं परमेश्वर के पास हमारे उद्धार की एक योजना है। यह योजना यीशु है। वह हमारे आगे एक प्रस्ताव रखता है, और हमें यह चुनाव करना होता है कि हम उसके छुटकारे की योजना को स्वीकार कर लें।

पुरानी वाचा में यशायाह और नई वाचा में यूहन्ना, इन दोनों की ही ज़रूरत के लिए परमेश्वर का यह प्रबन्ध मुफ़्त और पूरी क्षमा थी। यशायाह के लिए इसका प्रतीकात्मक चिन्ह् एक शुद्ध करने वाला कोयला था, और यूहन्ना को पुन:स्थापित करने के लिए प्रभु का चंगा करने वाला हाथ था। उड़ाऊ पुत्र की कहानी को याद करें। उसने सुअरों के झुण्ड के बीच बैठकर एक अच्छा वक्तव्य तैयार कर लिया था, लेकिन अपने पिता को उसने अपनी तरफ एक पोशाक, अँगूठी और जूतियाँ लिए हुए दौड़कर आते देखा, और उसका एक ज़बरदस्त जश्न के साथ स्वागत किया गया।

एक अफ्रीकी मुहावरा एक सहज रूप में बस इतना कहता है, 'जो क्षमा करता है, वही जीतता है!' प्रभु यीशु, जिसने क्रूस पर से उन सैनिकों के लिए प्रार्थना की थी जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया था, वह महान् विजेजा है, और जब हम अपने प्रभु के रूप में उसे स्वीकार कर लेते हैं, तब हम उसकी जीत में सहभागी हो जाते हैं।

यह प्रार्थना करें कि आप जिन लोगों को ख़ास तौर पर परमेश्वर के सम्मुख ला रहे हैं, वे परमेश्वर के अनन्त भोज के आमंत्रण में शामिल होने के आनन्द को जानें, और यीशु की क्षमा के स्पर्श में विश्राम पाएँ।

लाम्बैथ सम्मेलन में आमंत्रित प्रतिनिधि

वह परमेश्वर जो चुनौती देता है

प्रकाशितवाक्य 2:4-5

मुझे तेरे ख़िलाफ यह कहना है कि तूने पहले जैसा प्रेम करना छोड़ दिया है। इसलिए याद कर कि तू कहाँ से गिरा है, और मन फिरा और पहले की तरह काम कर - वर्ना मैं तेरे पास आता हूँ और अगर तू मन न फिराए तो तेरे दीपदान को उसके स्थान से हटा दूँगा।

इफिसुस की कलीसिया के लिए प्रभु के पत्र को लिखना शायद यूहन्ना के लिए सबसे पीड़ादायक रहा होगा। यह उसकी कलीसिया थी। अब अपनी कलीसिया को लिख रहा था, और हालांकि यीशु ने उनके बीच पाए जाने वाले खरे धर्म-सिद्धान्त और सुसमाचार के प्रचार में किए जा रहे उनके कड़े परिश्रम की प्रशंसा की थी, फिर भी उनके सम्मुख एक ज़बरदस्त चुनौती रखी गई थी। अगर वह कलीसिया प्रभु के लिए और एक-दूसरे के लिए अपने मसीही प्रेम को पुन:प्राप्त नहीं करती, तो उसका अस्तित्व में बन रहना ही ख़तरे में पड़ गया था।

सालों पहले का प्रेम, आज किसी काम का नहीं होता है।

अगर परमेश्वर के प्रेम की जगह अब सिर्फ एक आदत ने ले ली है, और अगर कलीसियाई सदस्यों के साथ परस्पर प्रेम ने नौकरशाही और कमिटियों की अंतहीन सभाओं ने ले ली है, तो आग बुझ गई है। इसमें ख़तरा यह है कि हम सिर्फ एक खोखला खोल बन कर रह जाते हैं जिसमें कोई भीतरी सच्चाई नहीं होती।

अफ्रीकी स्टडी बाइबल इस बात को इस तरह कहती है: 'कोई भी बासी भोजन खाना या 20 साल पुराना अख़बार पढ़ना नहीं चाहता। हम ताज़ा खाना और ताज़ी ख़बरें चाहते हैं। हम परमेश्वर को ऐसा प्रेम न दें जो बासी और ठण्डा हो। हमें कलीसिया में ढोंग-दिखावे के लिए पश्चात्ताप करने की ज़रूरत है।' इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि यूहन्ना के पत्र मसीही समाज में एक-दूसरे से प्रेम करने के उत्साहवर्धन से भरे हुए हैं। यूहन्ना की उसकी वृद्धवस्था में भी विश्वासियों से यह आग्रह करने की परम्परा, 'छोटे बच्चों, आपस में एक-दूसरे से प्रेम करो,' आज के पद की ज्योति में पूरी तरह तर्कसंगत लगती है।

यीशु ने कलीसिया को यह चुनौती देने के साथ-साथ उत्साहित भी किया। जब कभी बाइबल हमें ऐसी चुनौती देती है: कुछ बदलने, कुछ करने, और हमारे अन्दर से किसी ऐसी बात को हटाने जो नहीं होनी चाहिए, तब हम आसानी से ऐसा महसूस करने वाले बन जाते हैं, 'अब मेरे पास कोई आशा नहीं है, इसके बारे में कुछ करने की मेरे अन्दर ताक़त नहीं है। मैं बहुत बार कोशिश कर चुका हूँ, लेकिन नाकाम ही हुआ हूँ।' परमश्वेर यह नहीं चाहता। उसने इस वजह से ही हमें पवित्र आत्मा का विस्मयकारी सामर्थ्य दिया है जो हम नहीं कर सकते उसे वह कर सके।

अगर प्रभु यीशु आपको या मुझे पत्र लिख रहा होता, तो हमें उत्साहित करने के लिए वह क्या लिखता? उसकी कृपा में, पहले ही क्या बदलाव हो चुका है? आज हमारी प्रार्थना में हम उससे, एक प्रेम-भरी चुनौती के रूप में, हमारे जीवन के वे क्षेत्र दिखाने के लिए कहें जिनमें वह और ज़्यादा बदलाव देखना चाहता है, और फिर उन बदलावों को सम्भव बनाने के लिए उससे पवित्र आत्मा का सामर्थ्य माँगें।

जब कोई चित्रकार एक चित्र बनाता है, तो वह अपनी आरम्भिक रेखाओं या रूपरेखा में तब तक सुन्दर रंग भरता है और उसमें बारीकी से काम करता है जब तक कि वह चित्र स्पष्ट नहीं हो जाता। हमें जगत के सम्मुख मसीह की छवि, उसका चित्र होना है, इसलिए हम प्रार्थना करते हैं कि वह ईश्वरीय चित्रकार हममें अपनी समानता को चित्रित कर दे। एक पुराने के गीत के बोल, 'हे प्रभु, मैं तेरी ज्योति में जगमगाता रहूँ...' हमें याद दिलाता है कि हमें इस तरह से जीना है कि लोग हमारे द्वारा मसीह को देख सकें: 'हे प्रभु, मैं तेरी ज्योति में जगमगाता रहूँ, अपनी कथनी और करनी में जगमगाता रहूँ, कि जीवित मसीह को जगत मुझमें देख सके, और वह भी उससे प्रेम करना सीख सके।

यह प्रार्थना करें कि आपके पाँच लोग, प्रभु यीशु के लोगों के जीवनों में उसे देख सकें।

बारीसाल धर्मप्रदेश, बांग्लादेश में प्रार्थना करती स्त्रियाँ

वह परमेश्वर जो सामर्थ्य से भरता है

प्रकाशितवाक्य 3:20-22

'देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ। अगर कोई मेरी आवाज़ सुनकर द्वार खोले, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूँगा, और वह मेरे साथ। जो जय पाए, उसे मैं अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठने दूँगा, जैसे मैं भी जय पाकर पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठा हूँ। जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।'

क्या आप एक सहज रूप में इन वचनों से प्रेम नहीं करते? पूरे जगत के अनेक मसीहियों के लिए नई वाचा में बहुत ही मूल्यवान वचन हैं। रानी विक्टोरिया के समयकाल के चित्रकार विलियम होल्मैन हन्ट द्वारा चित्रित मसीह के उस मशहूर चित्र में, उसके दरवाज़े में बाहर की तरफ कोई मूठ नहीं है; इसका अर्थ है कि फिर वह दरवाज़ा सिर्फ भीतर से ही खोला जा सकता है। उस चित्रकार ने कहा, 'मैंने यह चित्र सिर्फ इसलिए नहीं बनाया था कि क्योंकि चित्रकारी के लिए यह एक अच्छा विषय था, बल्कि इसलिए क्योंकि यह एक ईश्वरीय आज्ञा थी।'

इन वचनों में प्रभु लौदीकिया के मसीहियों को लिख रहा था जो यह सोचते थे कि वे आत्मिक रीति से बहुत धनवान हैं, दूसरों से बेहतर हैं, और उन्हें किसी चीज़ की कोई ज़रूरत नहीं है। प्रभु ने उन्हें यह समझने के लिए आमंत्रित किया कि असल में वे, 'ग़रीब, अन्धे और नंगे' थे; उनके लिए यह ज़रूरी था कि वे अपनी कलीसिया और अपने हृदयों के दरवाज़े खोल दें जिससे कि मसीह उन्हें वह बना सके जो होने के लिए वे रचे गए थे।

लौदीकिया उसके महँगे कपड़े, आँख की दवाओं और उसकी धन-सम्पत्ति के लिए बहुत प्रख्यात् था। लेकिन हमारी बुलाहट भौतिक भोग-विलास की वस्तुओं पर ध्यान लगाए रखने के लिए नहीं है। हमें प्रभु यीशु जैसा होने के लिए बुलाया गया है। हमारी व्याख्या हमारी राष्ट्रीयता, हमारी समृद्धि, हमारी ग़रीबी, हमारी शिक्षा, या हमारे काम-धन्धे से नहीं, बल्कि जैसे संत पौलुस ने कहा था, हमारी पहचान 'मसीह में' होनी चाहिए।

मसीह को हमारे जीवन में साझीदार बनाने के लिए आमंत्रित करना सिर्फ एक बार किए गए मन-फिराव का मामला नहीं है, हालांकि यह वही 'बड़ा सौदा' है, जिसमें बपतिस्मा इसका एक प्रभावी चित्र और प्रतीक होता है। हम चाहे कितने भी लम्बे समय से एक मसीही क्यों न हों, लेकिन मन-फिराव प्रतिदिन किया जाने वाला एक अनिवार्य काम है।

एक अफ्रीकी कहावत यह कहती है, 'एक डोंगी (नाव) कभी इतनी बड़ी होती कि वह उलट न जाए।' ऐसे समय होते हैं जब हमारा घमण्ड – अपने बल-बुद्धि से सफल हुए स्त्री-पुरुष

होने का हमारा दृढ़ निश्चय, प्रभु यीशु की समानता में बदलते जाने में हमारे रास्ते में रुकावट बन जाता है। हम कभी इतने परिपक्व, चतुर और महत्वपूर्ण नहीं हो सकते कि मसीह को हमें उठाकर ले चलने की ज़रूरत ही न पड़े।

यह प्रार्थना करें कि आपके पाँच लोगों में ऐसी नम्रता हो कि वे उनके जीवनों के दरवाज़ों पर मसीह को खटखटाता और पुकारता हुआ सुन लें, और वे यीशु को उसी तरह आमंत्रित करने वाले बन जाएँ जैसे वह उन्हें आमंत्रित कर रहा है।

जैसे लूका अध्याय 24 में इम्माऊस के रास्ते में चले जा रहे चेले के साथ हुआ था, वैसे ही हम यह पाते हैं कि जब हम मसीह के लिए अपना दरवाज़ा खोलते हैं, तो मेहमान मेज़बान बन जाता है। हम सभी का अतिथि-सत्कार करें, क्योंकि ऐसा करते हुए कभी-कभी लोगों ने स्वर्गदूतों का भी सत्कार किया है (इब्रानियों 13:2)।

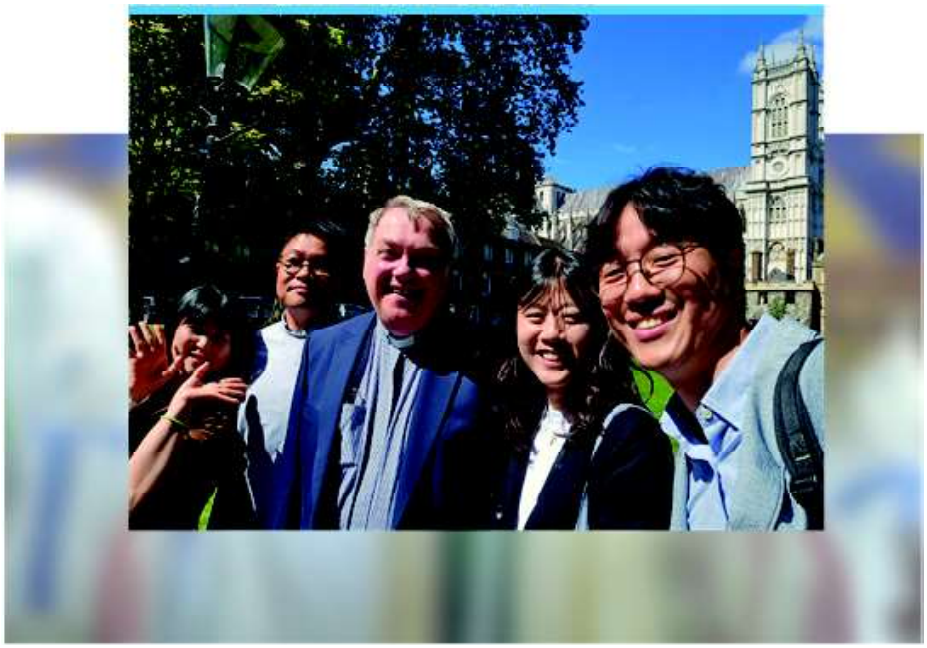

रैव्ह. बॉब की, दक्षिण कोरिया के अगुवों के साथ

पैन्तेकुस्त
'आ पवित्र आत्मा'

प्रकाशितवाक्य 3:22

'जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।'

एक अफ्रीकी कहावत में ऐसा कहा जाता है,'सुनना एक ऐसी कौशल है जिसे सीखना सबसे मुश्किल, और जिसे हासिल करना सबसे ज़रूरी है।' प्रकाशितवाक्य के आरम्भ में, सातों कलीसियाओं को लिखे गए पत्रों में हम यह पढ़ते हैं, 'जिसके सुनने के कान हों वह यह सुने और समझे कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।' हरेक कलीसिया को दिया गया संदेश अलग है, लेकिन जो कुछ आत्मा बोल रहा है, उसे सुनने व समझने की आज्ञा हरेक के लिए ज़रूरी है।

हमने अपने उन पाँच लोगों के लिए प्रार्थना की है जिनसे परमेश्वर प्रेम करता है। हमने तेरा राज्य आए के इन सभी दिनों के दौरान अपनी कलीसियाओं के लिए और अपने लिए भी प्रार्थना की है। अब पैन्तेकुस्त का दिन आ पहुँचा है,और इसमें यह पूछने का एक अच्छा समय है, 'पवित्र आत्मा क्या चाहता है मैं वह सुनूँ, समझूँ, उसे अपने हृदय में ग्रहण करूँ और उसमें आज्ञापालन करूँ?'

जब प्रभु यीशु ने यूहन्ना के द्वारा प्रकाशितवाक्य की कलीसियाओं को लिखा था, तब उसने सारी स्थिति को पूरी तरह जानते हुए लिखा था - वह हरेक कलीसिया और हरेक विश्वासी की सभी आशाओं, आशंकाओं, सपनों, चुनौतियों, कमियों और नाकामियों को जानता था। वे पत्र एक ऐसे पवित्र प्रेम में पैदा हुए हैं, जो मसीहियों के लिए यह लालसा करता है अपनी मुश्किलों के बीच तसल्ली पाएँ, अपने चुनौती-भरे अवसरों में नया बल पाएँ, और अपनी निर्बलता में सामर्थ्य पाएँ।

प्रभु कलीसियाओं के लिए भी वैसी ही लालसा करता है जैसे वह हमारे लिए करता है, कि फिर हम वह सब कुछ हो सकें जो हमें बनाना चाहता था, वह सब कुछ जो हम पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से बन सकते हैं।

पैन्तेकुस्त के पहले दिन, जिसका बयान लूका ने प्रेरितों के काम अध्याय 2 में किया है, उसमें चेलों ने, जो हमारी ही तरह मसीह के स्वर्गारोहित हो जाने के दिन से एकाग्रचित्त होकर प्रार्थना कर रहे थे, वह पा लिया जो उनकी कल्पना से भी बढ़कर था। पवित्र आत्मा का आवेग उन्हें यरूशलेम की सड़कों पर ले गया कि वे सबके साथ प्रभु यीशु की मृत्यु और उसके पुनरुत्थान का सुसमाचार साझा कर सकें। आत्मा की आग ने उन्हें नए दान-वरदान दिए, नए काम

करने और पुराने प्रलोभनों पर जयवंत होने की योग्यता दी, और उन्हें भीतर से बदलना शुरू कर दिया। पवित्र आत्मा द्वारा अन्य-भाषाओं (अनजानी बोलियों) का वरदान, यह प्रदर्शित करने वाला एक चिन्ह् था कि यीशु सारे जगत के लिए है।

हमारे जगत को उन अलग-अलग भाषाओं/बोलियों की ज़रूरत है जो उस पहले पैन्तेकुस्त के दिन बोली गई थीं। नई ज़रूरतें हैं, नई संस्कृतियाँ हैं, संपर्क करने के लिए नई पीढ़ियाँ हैं, लेकिन यीशु का सुसमाचार वही है – वह कभी नहीं बदलता। वह एक ही बार हमारे पापों के लिए मरा। वह एक ही बार मर के ज़िन्दा हुआ है। और वह एक बार फिर, प्रभु और न्यायकर्ता के रूप में आएगा।

पहले चेलों की तरह, हम भी मसीह के पहले आगमन और दूसरे आगमन की दोनों पहाड़ी चोटियों के बीच की खाई में रह रहे हैं। हम इस आज्ञा की गूँज को सुनते हुए अपने जीवन जीते हैं, 'जाओ, और सब जातियों के लोगों को चेले बनाओ' (मत्ती 28:19)। हम इस निश्चय के साथ आगे बढ़ते हैं कि प्रभु ने अपने वचन में हमें जो आज्ञाएँ दी हैं, उनका पालन करने के लिए वह अपने पवित्र आत्मा द्वारा हमें सामर्थ्य भी प्रदान करेगा। हम इस यह इस कथन को याद करते हुए कर सकते हैं कि हम परमेश्वर के वचन को पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से बाँटते हैं, और इसके नतीजों को परमेश्वर के हाथ में छोड़ देते हैं।

'हे प्रभु, इन पाँच लोगों की मदद कर कि ये तेरी बुलाहट को सुन सकें, तेरे प्रेम का प्रत्युत्तर दे सकें, और प्रभु यीशु को स्वीकार कर सकें। आमीन।

हॉन्ग-कॉन्ग के सेंट जॉन धर्मपीठ (कैथीड्रल) में कलीसियाई सभा

thykingdomcome.global